उपनिषदों में
संन्यासयोग

प्रो. (डॉ.) ईश्वर भारद्वाज

उपनिषदों में संन्यासयोग

प्रो. (डॉ.) ईश्वर भारद्वाज
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
मानवचेतना एवं योगविज्ञान विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार, उत्तराखण्ड (भारत)

University Department of Yoga RU
No/PGDY/...211...
Library

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
नई दिल्ली (भारत)

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : विषय प्रवेश १-५८

उपनिषद् शब्द का निर्वचन
उपनिषदों की संख्या
उपनिषदों की विषय वस्तु
तत्त्व-मीमांसा
ज्ञान मीमांसा
आचार-मीमांसा
देवताओं का स्वरूप
परा-अपरा विद्या
व्यवहार और नीति
कर्म-स्वातन्त्र्य
गमनागमन का सिद्धान्त
आत्मा की अपरोक्षानुभूति
योग शब्द की व्युत्पत्ति एवं परिभाषाएं
योग की विभिन्न पद्धतियां
विभिन्न योगों का स्वरूप व महत्व
कर्मयोग
ज्ञानयोग
भक्तियोग
संन्यासयोग
विभिन्न योगों में संन्यास योग का स्थान
संन्यास विषयक विभिन्न योगियों के विचार
आचार्य शंकर
विज्ञान भिक्षु

वाचस्पति मिश्र
स्वामी दयानन्द
स्वामी विवेकानन्द
श्री अरविन्द
विभिन्न संन्यासयोगियों का परिचय संवर्तक, आरूणि, श्वेतकेतु, हारीतक, वामदेव, जड़भरत, दत्तात्रेय, याज्ञवल्क्य, जनक, शुकदेव, दाशरथि भरत, आचार्य शंकर, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, श्यामाचरण लाहिड़ी। विभिन्न दर्शनों में संन्यास की चर्चा, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्य दर्शन, योग दर्शन, पूर्व मीमांसा दर्शन, वेदान्त दर्शन

द्वितीय अध्याय : अधिकारी विवेचन

संन्यास शब्द की व्युत्पति एवं स्वरूप ५९-८९
संन्यास धर्म और संन्यासयोग : भेदाभेद-विवेचन
संन्यास का अधिकारी कौन? चातुर्वण्य या केवल ब्राह्मण, ब्राह्मणवादी पक्ष, त्रैवर्णिक पक्ष, चातुर्वर्ण्य पक्ष
चातुर्वर्ण्य का आधार : समीक्षा
संन्यास का समय
संन्यास और त्रिविध एषणाएं
छद्म संन्यास
समीक्षा

तृतीय अध्याय : दीक्षा विवेचन

दीक्षा का महत्व ९०-१०८
दीक्षा के भेद
समय दीक्षा, विक्षिप्त दीक्षा, संक्षिप्त दीक्षा, सवोनिवार्ण दीक्षा, उच्चार दीक्षा, मूढजना श्वासदायिनी दीक्षा, मृतोद्धार दीक्षा या परोक्ष दीक्षा, संन्यास दीक्षा
संन्यास दीक्षा के पूर्व के कर्तव्य
संन्यास दीक्षा की विधि
शिवपुराणोक्त संन्यास दीक्षा की विधि
दीक्षा लेने के अधिकारी व अनधिकारी
संन्यास समीक्षा दीक्षा देने के अधिकारी व अनधिकारी

चतुर्थ अध्याय : कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेचन १०९-१५६

अजिह्व, नपुंसक, पंगु, अंधा, बधिर, मुग्ध की व्याख्या
संन्यासयोग की अवधि में आचरणीय तत्व
यायावरत्व, भैक्ष्यचर्या, दण्ड-कमण्डलू धारण, प्रणवजप, भस्मालेपन, रूद्राक्ष धारण, एक्षणा त्याग, स्वाध्याय
त्रिविध दण्ड : वाक्दण्ड, कायदण्ड और मानस दण्ड
"जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्" की व्याख्या और योगी के आचरण की मीमांसा
संन्यासी और दान
मौन एवं अमौन
संन्यासयोग में धारणीय वस्तुएं
कुण्डिका, चमस, शिक्य, उपानह, कन्या, कोपीन
संन्यासयोगी का भोजन
संन्यासयोगी के लिए त्याज्य वस्तुएं
आज्य, एकत्राम्न, गन्धलेपन, नमक, अभ्यंग, सुन्दर वस्त्र, मित्राह्लाट, स्पृहा, परिचित स्थान, स्त्री, सुवर्ण, सभास्थल, राजधानी
बन्धनकारक षट्कर्म
आसन, पात्रलोप, संचय, शिष्य-संचय, दिवास्वाय, वृथालाप
समीक्षा

पंचम अध्याय : भावना विवेचन १५७-१९०

भावना क्या है?
पूर्व मीमांसा दर्शन-मत, योगदर्शन-मत, भगवद्गीता-मत, आयुर्वेदशास्त्र-मत, काव्यशास्त्र-मत
संन्यासयोग की अवधि में की जाने वाली भावना के तत्व और उनकी व्याख्या
वैराग्य भावना, शास्त्राभ्यास में अरति, जीवन और मरण के प्रति औदासीन्य, बाह्याचार से अश्रद्धा, सम्मान से उद्विग्नता, देह में अनास्था, जगत् में आत्म-भावना, अध्यात्म में रति
तप, स्वाध्याय और श्रद्धा की संन्यास में उपयोगिता

वाक्, मन, ज्ञानात्मा व महदात्मा का नियमन
सर्वकर्म परित्याग विषयक विभिन्न मत
सुरेश्वराचार्य का मत, आचार्य शंकर का मत, पद्मादाचार्य का मत, मीमांसा का मत, वैष्णवाचार्यों का मत, सिद्धान्त पक्ष
यज्ञोपवीतादि का त्याग
संन्यासयोग की दुर्गमता
भावना का समय
भावना की उपयोगिता
चित्त शुद्धि, तन्मयता की प्राप्ति, ऐश्वर्यदर्शन की योग्यता, असंगत्व की प्राप्ति, समदर्शन
समीक्षा

षष्ठ अध्याय : संन्यासयोगी - भेद-विवेचन १९१-२०९
संन्यास एवं संन्यासयोगियों के भेद
भेद का आधार
चतुर्विध संन्यासी
वैराग्य संन्यासी, ज्ञान संन्यासी, ज्ञान-वैराग्य संन्यासी, कर्म संन्यासी
ज्ञान वैराग्य संन्यासी की श्रेष्ठता
षड्विध संन्यासयोगी
कुटीचक या कुटीचर, बहूदक, हंस, परमहंस, तुरीयातीत, अवधूत,
षड्विध संन्यासियों का गति-वर्णन
समीक्षा

सप्तम् अध्याय : उपादेयता व उपाय विवेचन २१०-२४७
संन्यास की उपयोगिता व फल
संन्यास द्वारा भव बन्धन का शैथिल्य
वर्ण चतुष्ट्य में संन्यासयोग की उपयोगिता
आश्रम चतुष्ट्य में संन्यासयोग की उपयोगिता
संन्यासयोग से अशरीरत्व की प्राप्ति
संन्यास से हिरण्यगर्भ लोक की प्राप्ति
संन्यास सहित आत्मज्ञानसे मुक्ति

सन्यासयोग सिद्धि के उपाय
तत्वोपदेश, निरन्तर अभ्यास, वैराग्य, अपरिग्रह विवेक के बहिरंग साधनों का चिन्तन न करना, जनसंग का परित्याग, नैराश्य, आरम्भ त्याग, सारग्रहण की प्रवृत्ति, एकग्रता, शास्त्रकृत नियमों का अनुल्लंघन, त्रवण परामर्श, वीतराग पुरुषों की संगति, कामचारित्व का त्याग, भोगवान्छा का त्याग, दोष दर्शन, कृतकत्यता का त्याग, गुरु सेवा, प्रभुकृपा।
भिक्षावृत्ति से संन्यासयोग की सिद्धि
लोकपरीक्षा से संन्यासयोग की सिद्धि
समीक्षा

अष्टम अध्याय : उपसंहार एवं निष्कर्ष २४८-२५४

संदर्भ ग्रन्थ सूची २५५-२६०

₹ : 700.00

ISBN : 978-93-81632-20-8

9789381632208

सत्यम पब्लिशिंग हाऊस
N-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली–59 दूरभाष: 011–25358642
E-mail : satyampub_2006@yahoo.com
शोरूम: 4378/4बी, 305, जे.एम.डी. हाउस,
मुरारीलाल स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002